International Research Journal of Human Resource and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor 8.414 Volume 8, Issue 11, Nov 2021
Website- www.aarf.asia, **Email** : editoraarf@gmail.com

पंजाब के जिला फतेहगढ़ साहिब से प्राप्त मिट्टी के पुरावशेषों का अध्ययन

अनिल यादव

इतिहास विभाग,

किशन लाल पब्लिक कॉलेज, रेवाड़ी (हरियाणा)

अध्ययन क्षेत्र में सर्वेक्षण व उत्खनन से प्राप्त पुरावशेषों का सांस्कृतिक क्रमानुसार जैसे–हड़प्पन संस्कृति, हड़प्पोत्तर संस्कृति, चित्रित धूसर मृद्भाण्ड संस्कृति, ऐतिहासिक काल, प्रारंभिक मध्यकाल आदि का अध्ययन विस्तृत रूप से किया गया है। पुरातात्त्विक अवशेष प्राचीन समाजों के प्रदर्शन का प्रतीक हैं जो उनके निर्मात्ताओं और उपभोक्ताओं के वास्तविक प्रतिनिधि हैं। यह विशेष समाजों के विचारों को बदलने का एक मूल्यवान दस्तावेज भी है। प्राचीन वस्तुएं कई पहलुओं को परिभाषित करने का महत्वपूर्ण स्रोत हैं, जिन्होंने पर्यावरण, कच्चे माल की पहुँच, प्रौद्योगिकी, निर्माण समूहों, विचारधारा, सबद्ध प्रथाओं और विश्वास प्रणालियां आदि में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इसलिए, यह सांस्कृतिक संयोजन प्राचीन समाजों का प्रामाणिक रिकॉर्ड है क्योंकि ये न केवल कला के टुकड़े हैं, बल्कि एक ऐसे गुमनाम समाज को भी दर्शाते हैं जिसके लिए हमारे पास कोई अन्य जीवन चलचित्र के सबूत नहीं है और प्राचीन संस्कृति और सामाजिक–आर्थिक जीवन के पुनर्निर्माण के लिए महत्वपूर्ण स्रोत हैं।

© Associationof Academic Researchers and Faculties (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

भौगोलिक परिचय

पंजाब का क्षेत्र प्रारम्भिक काल से ही कृषि समुदायों के लिए रूचि का क्षेत्र रहा है क्योंकि यह क्षेत्र दोआब अर्थात् यमुना और सतलुज का क्षेत्र होने के कारण कृषि समुदायों के लिए प्रारम्भिक काल से ही बहुत महत्वपूर्ण रहा है। सतलुज–यमुना दोआब का क्षेत्र होने के कारण ही यहाँ पर अनेक प्रकार के जीव–जंतु एवं अनाज की किस्में विकसित हुई। 'पंजाब' शब्द का पहली बार इस्तेमाल शेरशाह सूरी द्वारा किया गया था। शेरशाह सूरी ने अपनी पुस्तक 'तारीख–ए–शेर' में किया था।[प] फिर से पंजाब का नाम 'आइने–अकबरी' में लिया गया है जो अबुल फजल द्वारा लिखी गई है जिसमें यह उल्लेख है कि पंजाब का क्षेत्र दो प्रांतों मुल्तान और लाहौर में विभाजित था।[पप] फारसी भाषा में 'पंजाब' का शाब्दिक अर्थ है पंज (पाँच) आब (जल) अर्थात् पाँच नदियों की भूमि[पपप] इस प्रकार पाँच नदियों का जिक्र है जो प्रदेश के बीच से गुजरती थी, आज भारतीय पंजाब में दो नदियाँ बहती हैं और दो नदियाँ पाकिस्तानी पंजाब में हैं और एक नदी उनके बीच की सामान्य सीमा है।

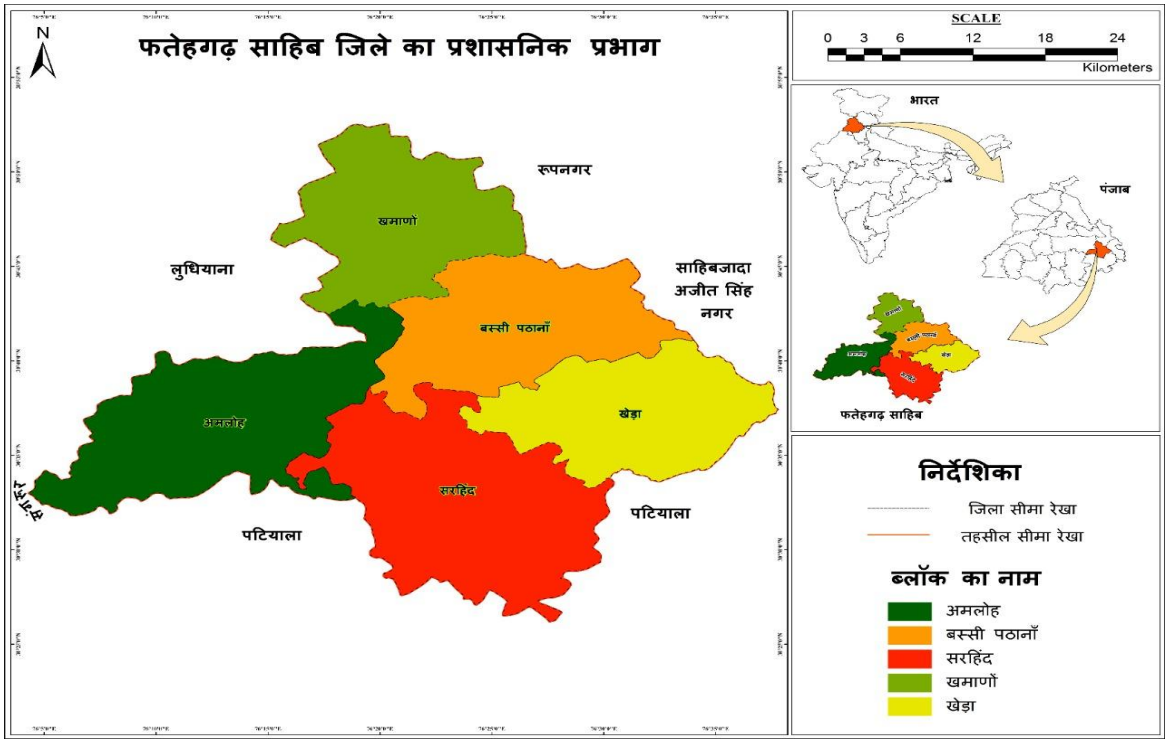

मानचित्र सं. 1.1: फतेहगढ़ साहिब क्षेत्र का प्रशासनिक मानचित्र

पंजाब के फतेहगढ़ साहिब जिले का गठन 13 अप्रैल, 1992 को लुधियाना, पटियाला और रूपनगर जिलों के हिस्सों को मिलाकर किया गया था। फतेहगढ़ साहिब जिले का नाम ऐतिहासिक गुरूद्वारा फतेहगढ़ साहिब के नाम पर रखा गया है। फतेहगढ़ साहिब जिला $30^0$68' उत्तरी अक्षांश एवं $76^0$41' पूर्वी देशांतर के बीच स्थित है। फतेहगढ़ साहिब जिला के उत्तर में लुधियाना और रूपनगर, दक्षिण में पटियाला, पूर्व में रूपनगर व पटियाला के कुछ हिस्सों और पश्चिम में लुधियाना और संगरूर के कुछ हिस्सों से घिरा हुआ है और राज्य को राजधानी चण्डीगढ़ से पश्चिम की ओर 50 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। फतेहगढ़ साहिब जिला पटियाला डिविजन में पड़ता है तथा जिले का कुल क्षेत्रफल 1147 वर्ग किलोमीटर है।[पअ] जिले में चार तहसील– फतेहगढ़ साहिब, अमलोह, खमाणों तथा बस्सी पठाना हैं। जिले में मंडी गोविन्दगढ़ और चनार्थल कलां उपतहसील है। फतेहगढ़ साहिब जिले में पांच विकास खंड हैं–फतेहगढ़ साहिब, अमलोह, खमाणों, खेड़ा और बस्सी पठाना। फतेहगढ़ साहिब जिले में कुल गाँवों की संख्या 454 हैं।[अ]

जिला–फतेहगढ़ साहिब	
क्षेत्रफल (Area)	1147 वर्ग किलोमीटर
जनसंख्या (Population) (2011)	600,163
उप प्रभाग (Sub Divisions)	4
तहसील (Tehsil)	4
उप तहसील (Sub Tehsil)	2
ब्लॉक (Block)	5
गाँव (Village)	454

सारणी सं. 1.1 : फतेहगढ़ साहिब जिले की प्रशासनिक व्यवस्था

फतेहगढ़ साहिब जिले में सर्वेक्षण के दौरान, शोधकर्ता ने हड़प्पन काल से लेकर प्रारम्भिक मध्यकाल तक के प्राचीन स्थलों की न केवल पहचान की है, बल्कि इन स्थलों से विभिन्न प्रकार की प्राचीन विविध वस्तुओं को प्रकाश में लाया गया। बाहरी व्यापारिक संबंध आद्य–ऐतिहासिक काल स ही प्रकट हुए हैं, लेकिन संभवतः स्थानीय संसाधनों ने शिल्प

गतिविधियों के उद्भव में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। सभी शिल्पों जैसे पत्थर, धातु, मिट्टी और हड्डी आदि की वस्तुओं की घटना ने हड़प्पन काल से अन्य बाद की संस्कृतियों में भौतिक समृद्धि में क्रमिक विकास, बदलाव और निरंतरता को दिखाया है। ये अवशेष सतह से पाए जाते हैं, इसलिए, उनकी सांस्कृतिक समानताएं और कालक्रम निर्धारित करना मुश्किल है, लेकिन फिर भी इनकी विभिन्न प्रकार की विशेषताओं का आंकलन कर इनके काल का निर्धारण करना संभव हुआ है। हालाँकि, सर्वेक्षण के दौरान बड़ी संख्या में प्राचीन वस्तुएं मिली है, परंतु इस शोध पत्र में उन विशेष एवं महत्वपूर्ण पुरावशेषों का विस्तृत वर्णन किया गया है जो अपने काल की संस्कृति, समाज व अन्य सामाजिक–आर्थिक पहलूओं को समझने में अपना विशेष योगदान देते हैं। जिसमें पक्की मिट्टी की वस्तुएं प्रमुख हैं। पुरावशेषों के सन्दर्भ में नवपाषाण काल से लेकर पूर्व मध्यकाल तक बने मिट्टी के पुरावशेषों का मानव जीवन के साथ सबसे नजदीकी संबंध रहा है। प्राचीन कालीन मिट्टी के पुरावशेषों के अध्ययन से मानव की उत्पादन तकनीक, सामाजिक, आर्थिक एवं धार्मिक आदि पहलुओं को समझा जा सकता है।[अप] हेनरी फ्रेकफर्ट का मानना है कि मृद्भाण्ड सभ्यता के रूप का आवश्यक अंग है। यह सिर्फ लोगों की खान–पान, सामाजिक प्रथाओं और मानव द्वारा प्राप्त तकनीकी विकास को नहीं दर्शाते बल्कि उनकी आर्थिक स्थिति को भी प्रकट करते हैं।[अपप]

मिट्टी के पुरावशेष प्राचीन इतिहास के स्रोत के रूप में अपनो महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। किसी भी पुरास्थल (प्रागैतिहासिक काल को छोड़ कर) के उत्खनन से सबसे अधिक संख्या में मृद्भाण्डों की प्राप्ति होती है। अध्ययन के दृष्टिकोण से इनका पुरातत्त्व में महत्वपूर्ण स्थान होता है क्योंकि ये अपने आकार–प्रकार, बनावट, रंग–रूप आदि के आधार पर किसी संस्कृति विशेष का प्रतिनिधित्व करते हैं। इनके निर्माण, रंगाई, तकनीक एवं चित्रकारी इत्यादि में जो उत्तरोत्तर विकास तथा परिवर्तन दृष्टिगोचर होते हैं उनमें मानव के जीवन का इतिहास छिपा होता है। यही कारण है कि संग्राहलयों में भी इनको विशिष्ट स्थान प्राप्त है। इनके आधार पर प्रत्येक काल के मानव के जीवन के विभिन्न पहलुओं जैसे सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक विकास एवं परिवर्तन को जानने में मदद प्राप्त होती है। साथ ही लोक जीवन के संबंधों में जानकारी भी प्राप्त होती है। जब से मानव ने स्थाइ रूप से रहना शुरू किया, तब से उसके जीवन में मिट्टी पर आधारित यह शिल्प या कुम्भकला प्रारंभ हुई तथा बाद के कालों में इस कार्य से जुड़े व्यक्ति मृद्पात्र बनाकर अपनी

आजीविका चलाते थे। भारत में मृद्भाण्ड व सिरेमिक अध्ययन का विकास मैके[अपपप] और वत्स[पग] आदि के हड़प्पनकालोन मृद्भाण्ड अध्ययन से आरंभ होता है।

अतः इस शोध क्षेत्र से सर्वेक्षण के दौरान बहुतायत संख्या में हड़प्पन काल से लेकर पूर्व मध्यकाल तक के मिट्टी के पुरावशेष मिले हैं। जिनका वर्णन विस्तृत रूप से अध्ययन इस शोध पत्र में किया गया है।

मिट्टी के पुरावशेष

मिट्टी सबसे आसानी से उपलब्ध कच्चा माल रही है जिसकी महत्वता न केवल हाथ से त्वरित कारीगरी में मदद करती है, बल्कि उपयोगितावादी और दैवीय दोनों रूपों और आकृतियों को बनाने का अवसर भी प्रदान करती है। भारत में मिट्टी शिल्प निर्माण कला का इतिहास इसकी उच्च पुरातनता को दर्शाता है। मिट्टी का शिल्प मिट्टी को मिलाने और ढालने के साथ–साथ इसे पकाने पर आधारित है। मेरे इस शोध–पत्र में मिट्टी की वस्तुओं में मिट्टी के केक, जानवरों की मूर्तियाँ, खिलौने के रूप में गाड़ी के पहिए, बर्तन, हॉप्सकॉच, चूड़ियाँ, गेंद आदि शामिल हैं। चूड़ियाँ प्राचीन काल से लेकर आज तक पुरुषों और महिलाओं द्वारा पहने जाने वाले सबसे आम प्रकार के आभूषण हैं। एक अन्य लोकप्रिय मिट्टी के पहिए जो खिलौना गाड़ियों के लिए एक लगाव के रूप में इस्तेमाल किया गया था तथा बच्चों के खेलने की एक अन्य वस्तु हॉप्सकॉच (Hopscotche) थी, जो प्रमुख रूप से मिट्टी के बर्तनों से बना था। इस क्षेत्र में पाई जाने वाली मिट्टी की वस्तुआ के निर्माण में अच्छी गुणवत्ता है। फतेहगढ़ साहिब जिले से सर्वेक्षण के दौरान अनेक प्रकार की पक्की मिट्टी के पुरावशेष प्राप्त हुए हैं जिनका विस्तृत वर्णन निम्न रूप से किया गया है।

इडली के आकार की मिट्टी की केक

मिट्टी की केक (त्रिकोणीय, गोलाकार और सपाट आकार) लगभग सभी हड़प्पा स्थलों से मिली हैं। अधययन क्षेत्र से सर्वेक्षण के दौरान काफी मात्रा में विभिन्न प्रकार की मिट्टी की केक की आकृतियाँ जैसे त्रिकोणीय, गोलाकार (इडली आकार) आर सपाट आकृतियों को प्राप्त किया गया हैं। इन मिट्टी की केक के उपयोग ओर बनावट के बारे में

अलग–अलग दृष्टिकोण हैं। अधय्यन क्षेत्र से सर्वेक्षण के दौरान प्राप्त मिट्टी की केक की बनावट और पकाव अच्छी तरह से संचालित नहीं हैं। ऐसा लगता है कि इन केक का उनके आकार और प्रकार के आधार पर कई अलग–अलग तरीकों से उपयोग किया गया है। चपटे, त्रिकोणीय और गोलाकार आकार के केक को रोटी पकाने के लिए इस्तेमाल किया गया हो ऐसा हो सकता है। गोल और अनियमित आकार की गांठें खाना पकाने के चूल्हों में और मिट्टी के बर्तनों के भट्ठों के मुहाने पर पाई गई हैं, जहां वे ताप के रूप में काम करते थे।[ग]

छायाचित्र सं.1 (1 से 9 तक) उत्तर हड़प्पन परंपरा की इडली के आकार की मिट्टी की केक, रंग में स्लेटी व हल्का लाल, दोनों तरफ उंगली के छिद्र के निशान बने हैं और यह मृदभांड की तरह मिट्टी को अच्छी तरह गूँथ कर नहीं बनाए गए और ना ही अच्छी तरह पकाए गए हैं, माजरी किशन वाली, लातौर व हंसाली स्थलों से प्राप्त। (पृ. 14)

त्रिकोणीय आकार की मिट्टी की केक

छायाचित्र सं. 2 (1 से 9 तक) उत्तर हड़प्पन परंपरा की आंशिक रूप से टूटा हुआ त्रिकोणीय आकार की मिट्टी की केक रंग में स्लटी व हल्का लाल; ब्रास, संघोल, फतेहपुर, माजरी किशन वाली, लातौर स्थलों से प्राप्त। (पृ. 14)

मिट्टी के मनके

ये अवशेष तत्कालीन लोगों की जीवनशैली, विश्वास एवं संस्कृति को समझने में उपयोगी है। शोध क्षेत्र में सर्वेक्षण के दौरान ब्रास, फतेहपुर, डंघेरियान, माजरो किशन वाली, हरीपुर और इशरहेल आदि पुरास्थलों की सतह से पक्की मृत्तिका निर्मित गोल छिद्रदार मनकें प्राप्त किए गए,जिनका विस्तृत विवरण निम्न प्रकार से किया गया है।

छायाचित्र सं. 3 (1 से 6 तक) ब्रास, फतेहपुर पुरास्थलों से प्राप्त, मिट्टी निर्मित गेरुए रंग के गोलाकार मनके। (पृ. 15)

छायाचित्र सं. 4 (1 से 4 तक) मिट्टी निर्मित स्लेटी रंग के गोलाकार मनके; ब्रास, फतेहपुर से प्राप्त। (पृ. 15)

छायाचित्र सं. 4 (5 से 7 तक) एक मिट्टी सुपारी के आकार के मनके, जिसके शीर्ष पर एक अवसाद होता है, रंग में हल्का लाल है; लातौर से प्राप्त। (पृ. 15)

छायाचित्र सं. 4 (8) एक घट के आकार का मिट्टी निर्मित स्लेटी रंग का गोलाकार मनका; लातौर से प्राप्त। (पृ. 15)

छायाचित्र सं. 4 (9 व 10) हस्त निर्मित मिट्टी के स्लेटी व लाल रंग के गोलाकार मनके; ब्रास, फतेहपुर से प्राप्त । (पृ. 15)

छायाचित्र सं. 4 (11) हस्त निर्मित, मिट्टी का गहरा स्लेटी रंग का एक गोलाकार बर्तन का ट्टा हुआ हिस्सा; फतेहपुर स्थल से प्राप्त हुआ है। (पृ. 15)

मिट्टी के पहिए और हॉपस्कॉच (Hopscotch)

मिट्टी के पहिये सभी सांस्कृतिक काल स मिलते हैं। इन पहियों में अलग–अलग विशिष्ट विशेषता होती हैं कुछ में एक हब होता है जिन्हे एकल हब वाले पहिये तथा जिनके दोनों तरफ हब हैं उन्हें द्वि–हब वाले पहिये के रूप में जाना जाता है।

हॉपस्कॉच आकार में गोलाकार होते हैं। ये आकार में छोटे से बड़े तक विभिन्न प्रकार के होते हैं लेकिन इतने बड़े नहीं होते कि हाथ में न पकड़ सकें। उनमें से अधिकांश आमतौर पर टूटे हुए बर्तनों और बर्तनों से किनारों को काटकर और गोल रूप में तैयार करके तैयार किए जाते हैं। खेलों के लिए उनके उपयोग का एक सामान्य कार्य और उद्देश्य ही एकमात्र तर्क है जो अच्छा हो सकता है। यह सभी सांस्कृतिक स्तरों से सूचित किया जाता है।

शोध क्षेत्र में सर्वेक्षण के दौरान हवारा, बैना बुलंद, लातौर, अमराला, फतेहपुर नवान आदि पुरास्थलों की सतह से विभिन्न आकार के पक्की मिट्टी निर्मित गोल छिद्रदार टूटे हुए पहिये और हॉपस्कॉच प्राप्त किए गए। हॉपस्कॉच का काल निर्धारण करना बहुत मुश्किल है जैसे ऊपर बताया गया है कि सामान्यत इनको मृद्भाण्ड के टुकड़ों से बनाया जाता था। इस प्रकार पुरास्थल के काल निर्धारण के अनुसार ही इनका कालक्रम तय किया गया है।

मिट्टी के पहिए

छायाचित्र सं. 5 (1 से 9 तक) मिट्टी के एकल हब पहिये, जो अच्छी तरह से उत्तल मिट्टी से बने है, और अच्छी तरह से हब निकाल दिया गया है, उत्तर हड़प्पन काल के; हवारा, बौर, बैना बुलंद, लातौर, अमराला, फतेहपुर नवान, दधेरी आदि से प्राप्त। (पृ. 16)

छायाचित्र सं. 5 (10) मिट्टी का द्वि–हब का पहिया, जो अच्छी तरह से उत्तल मिट्टी से बना है, और अच्छी तरह से हब निकाला हुआ है, आरंभिक मध्यकाल का; हवारा स्थल से प्राप्त हुआ है। (पृ. 16)

छायाचित्र सं. 5 (11) मिट्टी का एकल हब पहिया, जो अच्छी तरह से उत्तल मिट्टी से बना है, और अच्छी तरह से हब निकाला हुआ है, उत्तर हड़प्पन काल के; हवारा स्थल से प्राप्त हुआ है। (पृ. 16)

मिट्टी के हॉपस्कॉच

छायाचित्र सं. 6 (1) उत्तर हड़प्पन काल का एक गोलाकार हॉप्सकॉच, रंग में हल्का लाल, खुरदुरे किनारों वाला, 26.10 मिमी मोटाई और 96.08 मिमी व्यास; फतेहपुर स्थल से प्राप्त हुआ है। (पृ. 16)

छायाचित्र सं. 6 (2–4) उत्तर हड़प्पन काल के बर्तन के टुकड़े के गोलाकार हॉप्सकॉच, रंग में हल्के लाल, खुरदुरे किनारों वाले, मोटाई में क्रमशः 06.20 मिमी, 13.30 मिमी, 11.10 मिमी और व्यास क्रमशः 49.08 मिमी, 42.92 मिमी, 50.18 मिमी व्यास; बौर, हवारा व लातौर पुरास्थलों से प्राप्त। (पृ. 16)

छायाचित्र सं. 6 (5 –7) आरंभिक मध्यकाल के बर्तन के टुकड़े के गोलाकार हॉप्सकॉच, रग में हल्के लाल, खुरदुरे किनारों वाले, मोटाई में क्रमशः 05.02 मिमी, 03.20 मिमी, 05.10 मिमी और व्यास क्रमशः 42.04 मिमी, 39.25 मिमी, 33.16 मिमी व्यास; कोलगढ़, कपूरगढ़ व अमराला पुरास्थलों से प्राप्त। (पृ. 16)

छायाचित्र सं. 6 (8) उत्तर हड़प्पन काल का एक गोलाकार हॉप्सकॉच, रंग में हल्का लाल, खुरदुरे किनारों वाला, 21.11 मिमी मोटाई और 32.08 मिमी व्यास; बौर पुरास्थल से प्राप्त। (पृ. 16)

छायाचित्र सं. 6 (9 –12) आरंभिक ऐतिहासिक काल के बर्तन के टुकड़े के गोलाकार हॉप्सकॉच, रंग में हल्के लाल, खुरदुरे किनारों वाले, मोटाई में क्रमशः 16.20 मिमी, 14.30 मिमी, 10.10 मिमी, 05.03 मिमी और व्यास क्रमशः 29.08 मिमी, 27.92 मिमी, 25.18 मिमी, 23.10 मिमी व्यास; फतेहगढ़ नवान, हवारा व लातौर पुरास्थलों से प्राप्त। (पृ. 16)

मिट्टी की गेंद

छायाचित्र सं. 7 (1 –12) इनका इस्तेमाल संभवतः खिलौना गेंद या गुलेल से शिकार के लिए दूर तक फेंकने हेतु किया जाता होगा; माजरी किशन वाली, हवारा, संघोल आदि स्थलों से गोलाकार गेंदें प्राप्त हुई हैं। (पृ. 17)

मिट्टी का मैलखोरा (Skin Rubber) और डब्बर (Dabber)

डब्बर ठोस मिट्टी से बना उपकरण है। डब्बर के उपयोग से धीरे–धीरे पीटने और बर्तन को वांछित आकार में लाने से सामने आती है। बिना किसी नुकसान के पूरा डब्बर इसकी पहचान, उद्देश्य और कार्य को स्पष्ट रूप से प्रकट करता है।

मैलखोरा (त्वचा को रगड़ने के लिए–Skin rubber) शरीर की सफाई के लिए एक सुविधाजनक वस्तु के रूप में प्रयोग की जाती ह। इसकी खुरदरी सतह धब्बेदार प्रकृति के रूप में होती है जिसे स्नान के दौरान रगड़ कर इस्तेमाल किया जा सकता है। इसे चौकोर, आयताकार या अंडाकार आकार में बनाया जाता है। मलखोरा (Skin rubber) सभी सांस्कृतिक काल में पाया जाता है। शोध क्षेत्र में सर्वेक्षण के दौरान डब्बर खेड़ी नौध सिंह स्थल और मैलखोरा बैना बुलंद पुरास्थल से प्राप्त किए गए। जिनका विस्तृत विवरण निम्न प्रकार से किया गया है।

मिट्टी का मैलखोरा (skin rubber) और डब्बर

छायाचित्र सं. 8 (1) मैलखोरा (त्वचा रगड़–Skin rubber) टूटा हुआ, आकार में त्रिभुजाकार है, उत्तर हड़प्पन काल; खेड़ी नौध सिंह पुरास्थल से प्राप्त। (पृ. 17)

छायाचित्र सं. 8 (2) एक ठोस पक्की मिट्टी का डब्बर, आंशिक रूप से ऊपरी हिस्सा टूटा हुआ, हल्के लाल रंग का, 54.33 मि.मी. ऊंचाई और 72.50 मिमी चाड़ाई, उत्तर हड़प्पन काल; बैना बुलंद पुरास्थल से प्राप्त। (पृ. 17)

मिट्टी से निर्मित पशु आकार की मृण्मूर्तियाँ

छायाचित्र सं. 9 (1) कूबड़ वाले बैल की हाथ से बनाई गई मिट्टी की मूर्ति, बुरी तरह क्षतिग्रस्त है, हल्के लाल रंग की, बेडौल, मूर्ति का माप 96.11 X 42.08 मि. मी.हैं, उत्तर हड़प्पन काल; माजरी किशन वाली स्थल से प्राप्त। (पृ. 18)

छायाचित्र सं. 9 (2) बैल की हाथ से बनाई गई मिट्टी की मूर्ति इसके मुँह की ओर का भाग टूटा हुआ है, लेकिन शरीर की बनावट को अच्छे से तराशा गया है, माप 36.01 X 39. 02 मि. मी.हैं, हल्के लाल रंग की, उत्तर हड़प्पन काल; ब्रिहमा स्थल से प्राप्त। (पृ. 18)

छायाचित्र सं. 9 (3,6 तथा 8 से 12 तक) अज्ञात पशुओं की मूर्तियों के पैर का टूटा भाग, हल्के लाल रंग का; दधेरी स्थल से प्राप्त। (पृ. 18)

छायाचित्र सं. 9 (4) एक अज्ञात पशु मूर्ति का एक पैर व कमर का टूटा भाग, हल्के लाल रंग का, उत्तर हड़प्पन काल; ब्रिहमा स्थल स प्राप्त। (पृ. 18)

छायाचित्र सं. 9 (5) हाथ से बनाई गई मिट्टी की मूर्ति का मुँह, पीछ की ओर का भाग टूटा हुआ है, हल्के लाल रंग की, उत्तर हड़प्पन काल; ब्रिहमा स्थल से प्राप्त। (पृ. 18)

छायाचित्र सं. 9 (7) एक अज्ञात पशु के सींगों का टूटा भाग, हल्के लाल रंग का, उत्तर हड़प्पन काल; ब्रिहमा स्थल से प्राप्त। (पृ. 18)

मिट्टी से बनी हस्त निर्मित सीटी (whistle)

छायाचित्र सं. 10 पकी मिट्टी से बनी हस्त निर्मित सीटी (whistle), जिसका पीछे का तथा नीचे का कुछ भाग टूटा हुआ है, बजाने में आधुनिक सीटी की तरह से बजती है, पक्षी के आकार में, माप 69.05 X 33.90 मि. मी. हैं, उत्तर हड़प्पन काल; चंडियाला स्थल से प्राप्त। (पृ. 18)

धूपदान (Incense burner)

छायाचित्र सं. 11 मिट्टी से निर्मित धूपदान (Incense burner), पूर्ण, रिम पर थोड़ा टूटा हुआ भाग के साथ, एक क्लब हैंडल के साथ समाप्त होता है, अनुष्ठानों और शुभ कार्यों के लिए एक विशेष प्रकृति के उद्देश्यों के लिए ठोस रूप से बनाए गए, ये बहुत सावधानी और बारीक फिनिश के साथ तैयार किए जाते हैं, लाल रग का, माप 80.01 X 112.98 मि. मी. हैं, आरंभिक मध्यकाल; बौर स्थल से प्राप्त। (पृ. 19)

मिट्टी की चूड़ियाँ

प्राचीन काल से लेकर आज तक स्त्री और पुरुष द्वारा पहने जाने वाले आभूषणों में सबसे आम आभूषण चूड़ियाँ हैं। अन्वेषणों से तांबे, मिट्टी और फियान्स से बनी चूड़ियों का पता चला है। हड़प्पन काल के दौरान मिट्टी की चूड़ियाँ काफी लोकप्रिय थी, जैसा कि उत्खनन और अन्वेषण से स्पष्ट है। मिट्टी की चूड़ियाँ आकार में गोल होती हैं और इनमें गोलाकार, आयताकार और वर्गाकार खंड होते हैं। कभी–कभी एक साथ चिपकाई गई दो से अधिक चूड़ियाँ भी पाई जाती हैं।

छायाचित्र सं. 12 (1 से 8 तक) गोलाकार मिट्टी की चूड़ियों के टुकडें, खंड में गोल, लाल रंग, उत्तर हड़प्पन काल; ब्रास, फतेहपुर, माजरी किशन वाली और इशरहेल पुरास्थल से प्राप्त। (पृ. 19)

छायाचित्र सं. 12 (9) तीन जुड़वां मिट्टी की चूड़ियों के टुकडें, खंड में आयताकार, लाल रंग, उत्तर हड़प्पन काल; फतेहपुर पुरास्थल से प्राप्त। (पृ. 19)

छायाचित्र सं. 12 (10 से 13 तक) दो जुड़वां मिट्टी की चूड़ियों के टुकड़े, एक साथ दबाए गए, खंड में आयताकार, भूरे रंग के लाल, उत्तर हड़प्पन काल; फतेहपुर, इशरहेल और लातौर पुरास्थल से प्राप्त। (पृ. 19)

छायाचित्र सं. 12 (14) एक गोलाकार मिट्टी की चूड़ी का टुकड़ा, खंड में रस्सी की तरह बल खाया हुआ, हल्का लाल रंग, उत्तर हड़प्पन काल; डंघेरियान पुरास्थल से प्राप्त। (पृ. 19)

छायाचित्र सं. 12 (15 व 16) एक गोलाकार मिट्टी की चूड़ी का टुकड़ा, खंड में आयताकार, रंग में हल्का लाल, उत्तर हड़प्पन काल; हरीपुर पुरास्थल से प्राप्त।(पृ. 19)

उपरोक्त वर्णित विश्लेषण में शोध क्षेत्र में सतही सर्वेक्षण से प्राप्त पुरावशेषों के प्रकार, बनावट, निर्माण तकनीक एवं मुख्य विशेषताओं को चिन्हित करते हुए फतेहगढ़ साहिब क्षेत्र के पुरातत्व एवं सांस्कृतिक क्रमानुसार ऐतिहासिक पहलुओं को समझने का प्रयास किया गया है। पुरावशेषों की इन्हीं चारित्रिक विशेषताओं के आधार पर फतेहगढ़ साहिब क्षेत्र में सांस्कृतिक काल का निर्धारण, पुराबस्ती प्रारूप, एवं आजीविका प्रतिरूपों को विश्लेषित किया जा सकता है।

पंजाब के जिला फतेहगढ़ साहिब से प्राप्त मिट्टी के पुरावशेषों के छायाचित्र

छायाचित्र–1 : इडली के आकार के हड़प्पन मिट्टी के केक

छायाचित्र–2 : त्रिकोणीय आकार के हड़प्पन मिट्टी के केक

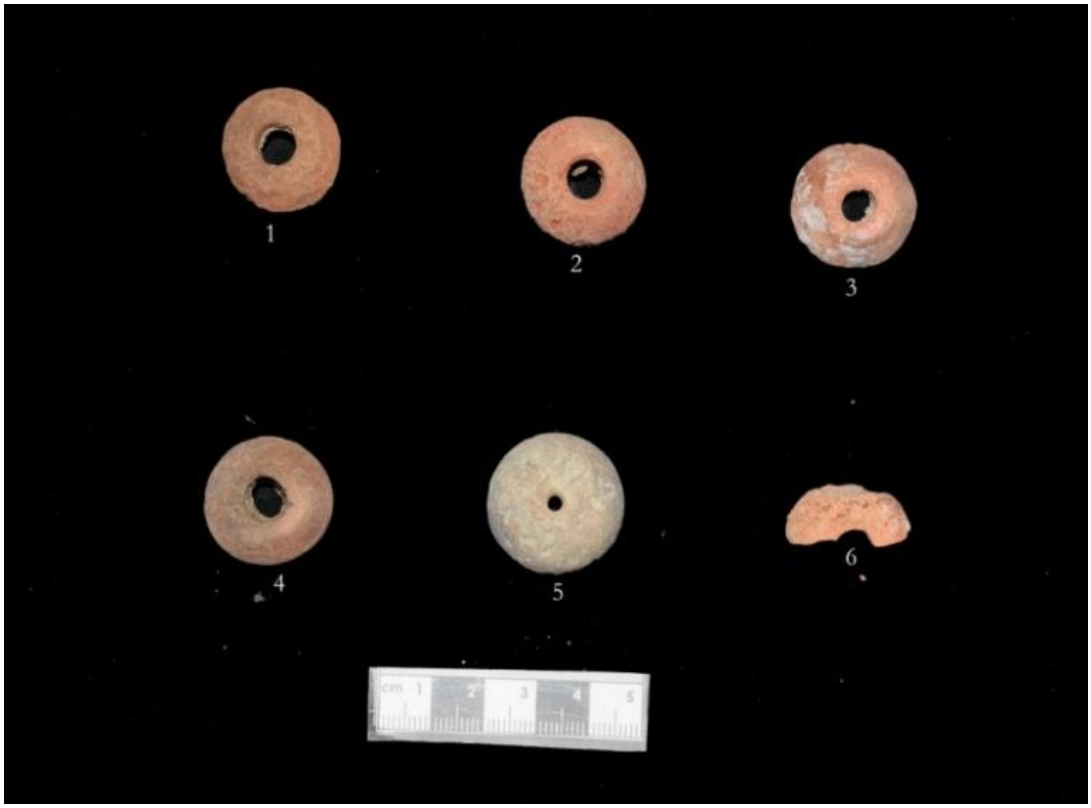

छायाचित्र–3 : मिट्टी के गोलाकार हड़प्पन काल के मनके

छायाचित्र–4 : हड़प्पन व एतिहासिक काल के मिट्टी के मनके

छायाचित्र– 5 : हड़प्पन से पूर्व मध्यकाल तक के काल के मिट्टी क पहिय

छायाचित्र–6 : हड़प्पन से पूर्व मध्यकाल तक के काल के मिट्टी के गोलाकार हॉप्सकॉच

छायाचित्र–7 : मिट्टी की गोलाकार गेंद

छायाचित्र–8 : मिट्टी का मैलखोरा (skin rubber) और डब्बर

छायाचित्र–9 : मिट्टी से निर्मित पशु आकार की मृण्मूर्तियाँ

छायाचित्र–10 : मिट्टी से बनी हस्त निर्मित हड़प्पन सीटी (whistle)

छायाचित्र–11 : मिट्टी से निर्मित पूर्व मध्यकाल का धूपदान (Incense burner)

छायाचित्र–12 : मिट्टी की गोलाकार हड़प्पन चुड़ियाँ

संदर्भ एवं टिप्पणियाँ

1. नारंग, के.एस., *हिस्ट्री ऑफ पंजाब,* यू.सी. कपूर एंड संस, दिल्ली, 1969 पृ. 1–3
2. कनिंघम, ए., *द एन्शिएंट ज्योग्राफी ऑफ इण्डिया,* एडि. बाय, एस. एम. शास्त्री, 1871, पृ. 170–173
3. सिंह, फौजा, *हिस्ट्री ऑफ द पंजाब,* वॉल्यूम–1,पब्लिकेशन ब्यूरो, पंजाबी युनिवर्सिटी, पटियाला, 1977, पृ. 1–2
4. सेंसस ऑफ इण्डिया, फतेहगढ़ साहिब डिस्ट्रिक्ट, *डायरेक्टोरेट ऑफ सेंसस ऑपरेशन,* पंजाब, 2001, पृ. 7
5. सेंसस ऑफ इण्डिया, सीरीज–4, पार्ट–XIIB, *डिस्ट्रिक्ट, सेंसस हैंडबुक फतेहगढ़ साहिब,* 2011, पृ. 14–15
6. एम. के. पाल, *क्राफ्ट्स एण्ड क्राफ्ट्समेन ट्रेडिशन इन इण्डिया,* कोणार्क पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 1978, पृ. 4
7. हेनरी फ्रेंकफर्ट, *द बर्थ ऑफ सिविलाइजेशन इन द नियर ईस्ट, लंदन,* विलियम्स एण्ड नॉरक्वेट कं., 1951, पृ. 34.
8. ई. जे. एच. मैके, टेक्निक्स एण्ड डिस्क्रिप्शन ऑफ मेटल वेसल्स, टूल इम्पलिमेंट्स एण्ड अदर आब्जेक्ट्स, इन जॉन मार्शल (सम्पा.) *मोहनजोदड़ो एण्ड द इण्डस सिविलाइजेशन,* लन्दन, आर्थर पब्लिकेशन 1931, पृ. 488–508
9. वत्स, एम. एस., *एक्सकॅवेशन एट हड़प्पा,* वो. 2, दिल्ली गर्वनमेंट ऑफ इण्डिया, 1940, पृ. 379
10. *https://www.harappa.com/slide/terra-cotta-nodules*